मेन्स मास्टर

संकटग्रस्त भारतीय मीडिया: क्यो वादी?

यह लेख भारतीय मीडिया की वर्तमान स्थिति पर गहराई से प्रकाश डालता है, सनसनीखेज, गलत सूचना और समझौता की गई अखंडता की एक चिंताजनक तस्वीर पेश करता है।

1991 के उदारीकरण के बाद से परिवर्तन:

• 1991 में उदारीकरण के बाद से भारत में ऑडियोविजुअल मीडिया में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।

• आर्थिक विकास, सरकारी नियंत्रण से मुक्ति और इंटरनेट के कारण मीडिया की मात्रा में विस्फोट हुआ है, लेकिन जरूरी नहीं कि गुणवत्ता में।

•

• पदार्थ से अधिक समाचार: "ब्रेकिंग न्यूज़" के जुनून और टीआरपी की दौड़ से प्रेरित, टेलीविजन समाचार सटीकता से अधिक सनसनी को प्राथमिकता देते हैं, अक्सर तथ्य और अटकलों के बीच की रेखाओं को धुंधला कर देते हैं। इस "मीडिया द्वारा परीक्षण" के प्रतिष्ठा के लिए विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

• सोशल मीडिया समस्या को बढ़ाता है: सोशल मीडिया पर असत्यापित "तथ्य" और वायरल राय आग को और भड़काती है, पारंपरिक मीडिया में ऐसे प्लेटफ़ॉर्म ढूंढे जाते हैं जिनमें उचित तथ्य-जाँच का अभाव होता है।

• प्रिंट मीडिया भी लड़खड़ाता है: हालांकि गहराई और विश्लेषण के लिए बेहतर रूप से सुसज्जित, प्रिंट मीडिया भी 24/7 चक्र में प्रतिस्पर्धा करने के दबाव से ग्रस्त है, जिसके कारण जल्दबाजी में प्रकाशन होते हैं और मानकों से समझौता होता है।

• लोकतंत्र के लिए परिणाम: पत्रकारिता नैतिकता में यह गिरावट लोकतंत्र की नींव को खतरे में डालती है। गलत जानकारी रखने वाले नागरिक गलत विकल्प चुनते हैं और जब मीडिया अपनी निगरानी भूमिका से पीछे हट जाता है तो सरकार की जवाबदेही प्रभावित होती है।

सार्वजनिक चर्चा पर मीडिया का प्रभाव:

• मीडिया द्वारा निर्णय लेने में जल्दबाजी करना, सार्वजनिक चर्चा को तुच्छ बनाकर, बड़े पैमाने पर ध्यान भटकाने का हथियार बन गया है।

• तथ्य, राय और अटकलों के बीच अंतर धुंधला हो गया है, जिससे शासन में जवाबदेही के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।

लोकतंत्र में स्वतंत्र मीडिया की भूमिका:

• स्वतंत्र मीडिया लोकतंत्र के लिए आवश्यक है, जो नागरिकों को सूचित विकल्प चुनने के लिए जानकारी प्रदान करता है और सत्ता में बैठे लोगों को जवाबदेह बनाता है।

• सतही चीज़ों के प्रति मीडिया का जुनून उसकी निगरानी जिम्मेदारी को कमज़ोर करता है।

चिंताएँ और आलोचनाएँ:

• चिंताओं के बावजूद, लोकतंत्र के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्वतंत्र प्रेस के प्रति एक मजबूत प्रतिबद्धता है।

• प्रेस पर सेंसरशिप या नियंत्रण के बजाय बेहतर पत्रकारिता का आह्वान।

लेखक, शशि थरूर, स्वतंत्र प्रेस के प्रबल समर्थक हैं, लेकिन सुधार की आवश्यकता पर जोर देते हैं:

• तथ्य-जांच और सटीकता: पत्रकारिता स्कूलों और मीडिया संगठनों को तथ्य-जांच और सटीकता को प्राथमिकता देनी चाहिए। खबर को तोड़ना सच्चाई की कीमत पर नहीं होना चाहिए।

• बेहतर प्रशिक्षण और नैतिक मानक: मान्यता प्राप्त मीडिया संस्थानों और न्यूज़ रूम को पत्रकारों में सटीकता, अखंडता और निष्पक्षता के मूल्यों को स्थापित करना चाहिए।

• विविध परिप्रेक्ष्य: प्रतिध्वनि कक्षों को तोड़ा जाना चाहिए। न्यूज़ रूम को विविध दृष्टिकोणों का स्वागत करना चाहिए और वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहिए।

• दर्शकों से जुड़ाव: दर्शकों/पाठकों के साथ विश्वास और जुड़ाव को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। हिंदू का लोकपाल मॉडल एक अच्छा उदाहरण है।

• सीमित मीडिया स्वामित्व: एक मजबूत और स्वतंत्र प्रेस सुनिश्चित करने के लिए कानूनों और विनियमों को एकल संस्थाओं (राजनीतिक या व्यावसायिक) को कई मीडिया आउटलेट्स को नियंत्रित करने से रोकना चाहिए।

• स्वतंत्र निरीक्षण: प्रिंट और टेलीविजन समाचारों के लिए एक एकल स्वतंत्र निकाय, जैसा कि विभिन्न समितियों द्वारा अनुशंसित है, कॉर्पोरेट और राजनीतिक प्रभाव को सीमित कर सकता है और मीडिया मानकों को बढ़ावा दे सकता है।

चुनौतियों के बावजूद, लेखक भविष्य को लेकर आशावादी है:

• भारत की बढ़ती साक्षरता दर अधिक जानकारीपूर्ण और मीडिया-प्रेमी जनता का वादा करती है।

• एक नैतिक और जिम्मेदार मीडिया एक अधिक सूचित, शिक्षित और राजनीतिक रूप से जागरूक भारत में योगदान दे सकता है, जो अपने नेताओं को जवाबदेह बनाने और अपने नागरिकों को सशक्त बनाने के लिए तैयार है।

अंत में, लेख भारतीय मीडिया की अखंडता को पुनर्जीवित करने और अपनी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान करता है। तभी भारत वास्तव में 21वीं सदी के लिए एक जिम्मेदार वैश्विक खिलाड़ी और एक आदर्श लोकतंत्र के रूप में अपनी जगह बना सकता है।

छोटे नागरिक

भारत की शिक्षा प्रणाली: एएसईआर 2023 द्वारा प्रकट प्रगति और चुनौतियाँ
शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) 2023, जिसका शीर्षक "बियॉन्ड बेसिक्स" है, भारत के शैक्षिक परिदृश्य में सफलताओं और कमियों दोनों पर प्रकाश डालती है, खासकर 14-18 आयु वर्ग के ग्रामीण युवाओं के लिए। यहां एक व्यापक विवरण दिया गया है:

मुख्य निष्कर्ष:

• सीखने की कमी: आधे से अधिक को बुनियादी गणित के साथ संघर्ष करना पड़ता है, ग्रेड 3-4 में सीखा जाता है, जो मूलभूत कमियों को दर्शाता है। 25% अपनी मातृभाषा में कक्षा 2 स्तर का पाठ नहीं पढ़ सकते।

• नामांकन रुझान: कुल मिलाकर नामांकन (86.8%) सकारात्मक है, लेकिन उम्र के साथ इसमें काफी गिरावट आती है (14 साल की उम्र में 3.9% बनाम 18 साल की उम्र में 32.6%)।

• स्ट्रीम विकल्प: उच्च ग्रेड में मानविकी का दबदबा है, विज्ञान में लड़कियां पिछड़ रही हैं (28.1% बनाम 36.3% लड़के) और व्यावसायिक प्रशिक्षण (5.6%)।

• डिजिटल पहुंच: स्मार्टफोन का उपयोग अधिक (90%) है, लेकिन ऑनलाइन सुरक्षा जागरूकता की कमी है।

चिंताएँ और निहितार्थ:

• सीखने में अंतराल: पढ़ने और गणित जैसे बुनियादी कौशल में संघर्ष प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं में संभावित कमियों की ओर इशारा करता है।

• हाई स्कूल ड्रॉपआउट: कक्षा 8 के बाद स्कूल छोड़ने की बढ़ती दर उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम के साथ चुनौतियों का संकेत देती है, जिसमें संभावित रूप से समायोजन की आवश्यकता है।

• लिंग असमानता: विज्ञान और व्यावसायिक प्रशिक्षण में लड़कियों का कम प्रतिनिधित्व समान पहुंच और अवसर पर सवाल उठाता है।

• डिजिटल साक्षरता संबंधी चिंताएँ: कम ऑनलाइन सुरक्षा जागरूकता के साथ स्मार्टफोन का अधिक उपयोग संभावित जोखिम पैदा करता है।

नीति और समाधान:

• निपुण भारत मिशन: इस मिशन के तहत मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर सरकार का ध्यान आशाजनक दिखता है, लेकिन अंतराल को पाटने के लिए और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

• पाठ्यचर्या की समीक्षा: उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम को छात्रों की क्षमताओं और रुचियों के साथ संरेखित करने से स्कूल छोड़ने वालों की संख्या कम हो सकती है और जुड़ाव में सुधार हो सकता है।

• समानता और समावेशन: लैंगिक असमानताओं को संबोधित करना और कमजोर समूहों के लिए अतिरिक्त सहायता प्रदान करना समान पहुंच और परिणामों के लिए महत्वपूर्ण है।

• डिजिटल सुरक्षा शिक्षा: डिजिटल युग में युवाओं को सशक्त बनाने के लिए ऑनलाइन सुरक्षा शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना आवश्यक है।

कुल मिलाकर, एएसईआर 2023 एक मिश्रित तस्वीर पेश करता है। जबकि बढ़ता नामांकन और डिजिटल पहुंच सकारात्मक है, सीखने की कमी, उच्च ड्रॉपआउट और लैंगिक असमानताएं तत्काल ध्यान देने की मांग करती हैं। मूलभूत कौशल को प्राथमिकता देकर, पाठ्यक्रम को अपनाकर, समानता को बढ़ावा देकर और डिजिटल सुरक्षा शिक्षा को एकीकृत करके, भारत अपने युवाओं के लिए अधिक प्रभावी और समावेशी शिक्षा प्रणाली बना सकता है।

उपग्रह मौसम को कैसे ट्रैक करते हैं?

मौसम मानचित्र और भारतीय उपग्रहों को समझना
यह लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि भारतीय उपग्रह मौसम पर कैसे नज़र रखते हैं और मौसम मानचित्रों पर रंगों के पीछे के अर्थ को समझाते हैं। यहां एक व्यापक विवरण दिया गया है:

मौसम मानचित्र पर रंगों को डिकोड करना:

• इन्सैट 3डी और 3डीआर उपग्रह: ये छवि के रंगों को प्रभावित करते हुए विभिन्न तरंग दैर्ध्य में डेटा कैप्चर करने के लिए सेंसर का उपयोग करते हैं।

• दिवस सूक्ष्मभौतिकी:
  ◦ दृश्यमान विकिरण (0.5 µm) हरे रंग की तीव्रता निर्धारित करता है।
  ◦ शॉर्टवेव इन्फ्रारेड (1.6 µm) लाल तीव्रता निर्धारित करता है।
  ◦ थर्मल इंफ्रारेड (10.8 µm) नीली तीव्रता निर्धारित करता है।

• रात्रि सूक्ष्मभौतिकी:
  ◦ थर्मल इन्फ्रारेड अंतर (12 µm - 10 µm) लाल तीव्रता निर्धारित करते हैं।
  ◦ थर्मल इंफ्रारेड और मध्य इंफ्रारेड अंतर (10.8 µm - 3.9 µm) हरे रंग की तीव्रता निर्धारित करते हैं।
  ◦ थर्मल इंफ्रारेड (10.8 µm) नीली तीव्रता निर्धारित करता है।

• रंग व्याख्या:
  ◦ लाल: परिपक्व तूफानी बादलों में मजबूत, उच्च अवशोषण के कारण बर्फ में कमजोर।
  ◦ हरा: निचले बादलों को इंगित करता है।
  ◦ नीला: ऊंचे बादलों और बर्फ जैसी ठंडी वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है।

विशिष्ट मौसम घटना पर नज़र रखना:

• बर्फ: कमजोर लाल (उच्च सौर परावर्तन के कारण) और मजबूत हरे (कम शॉर्टवेव अवरक्त अवशोषण के कारण) द्वारा पहचाना जाता है।

• बादल: रंग संयोजन के आधार पर विभिन्न प्रकारों को पहचाना जा सकता है। ऊंचे, भारी बादल सिस्टम निचले बादलों के साथ अलग-अलग रंग के रंगों के रूप में मिश्रित दिखाई देते हैं।

• गरज के साथ तूफ़ान: प्रस्तावित दिन/रात के माइक्रोफ़िज़िक्स डेटा संयोजन आसन्न तूफ़ानों का संकेत दे सकते हैं।

सैटेलाइट डेटा संग्रह:

• रेडियोमीटर: तापमान और विद्युत गतिविधि जैसे विकिरण गुणों को मापें।

• वायुमंडलीय साउंडर्स: तापमान, आर्द्रता और जल वाष्प वितरण को मापें।

• संयुक्त डेटा: विभिन्न वायुमंडलीय विशेषताओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

भारतीय मौसम उपग्रहों का विकास:

• कल्पना 1 (2002): प्रारंभिक वीएचआरआर और डेटा-रिले ट्रांसपोंडर ले गया।

• इन्सैट 3ए (2003): उच्च रिज़ॉल्यूशन के साथ बेहतर वीएचआरआर।

• इन्सैट 3डी (2016): रेडियोमीटर और अतिरिक्त साउंडर, डेटा-रिले और खोज-और-बचाव ट्रांसपोंडर में महत्वपूर्ण प्रगति।

• इन्सैट 3डीआर (2016): 3डी पर और अधिक परिशोधन।

• आगामी INSAT 3DS (2024): उन्नत क्षमताओं के साथ अपेक्षित लॉन्च।

प्रीलिम्स बूस्टर

जीएम फसलों से सस्ता होगा खाद्य तेल: सरकार

- ⚖️ जीएम सरसों पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई: सुप्रीम कोर्ट ने आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) फसलें, विशेषकर सरसों उगाने पर सरकार की दलीलें सुनीं, जिसमें भारत की खाद्य सुरक्षा के लिए संभावित लाभों और विदेशी निर्भरता को कम करने पर जोर दिया गया।
- 🌾 सरकार का तर्क: सरकार का दावा है कि सरसों जैसी जीएम फसलों की खेती से गुणवत्ता वाले खाद्य तेल अधिक किफायती हो जाएंगे, जिसका लक्ष्य खाद्य सुरक्षा को बढ़ाना और विदेशी निर्भरता को कम करना है, आंकड़े बढ़ती आबादी के कारण खाद्य तेल की बढ़ती मांग का संकेत देते हैं।
- 🛢️ खाद्य तेल की मांग और आयात सांख्यिकी: भारत की कुल खाद्य तेल की मांग, जो आयात के माध्यम से काफी हद तक पूरी होती है, विदेशी स्रोतों पर निर्भरता को कम करने के लिए घरेलू उत्पादन की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।
- 🌱 खुले क्षेत्र में परीक्षण और पर्यावरण संबंधी चिंताएं: सरकार ने नियंत्रित परिस्थितियों और विशेषज्ञ मार्गदर्शन पर प्रकाश डालते हुए जीएम फसलों के खुले क्षेत्र में परीक्षण का बचाव किया, जबकि याचिकाकर्ताओं ने पर्यावरणीय क्षति के बारे में चिंता जताई।
- 🌾 जीएम सरसों के फायदे: सरकार का दावा है कि जीएम सरसों की पैदावार बढ़ी है और यह भारत में खरपतवारों के कारण होने वाले आर्थिक नुकसान को दूर कर सकती है।
- 🚦 नियामक प्रणाली के लिए चुनौतियां: याचिकाकर्ताओं ने नियामक प्रणाली के हितों के टकराव, विशेष रूप से जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (जीईएसी) के बारे में चिंताओं का हवाला देते हुए जीएम सरसों की व्यावसायिक रिलीज को चुनौती दी है।
- 🌍 वैश्विक संदर्भ: सरकार भारत में मुख्य रूप से जीएम कैनोला बीजों और सोयाबीन तेल की एक महत्वपूर्ण मात्रा से कैनोला तेल के मौजूदा आयात की ओर इशारा करती है, जो वैश्विक स्तर पर जीएम सोयाबीन की खेती के प्रसार को उजागर करता है।

अनुसूचित जाति का उपवर्गीकरण: लाभ के समान वितरण पर गौर करने के लिए पैनल

- 📜 एससी उप-वर्गीकरण के लिए समिति का गठन: केंद्र सरकार ने 1,200 से अधिक लोगों के बीच लाभ, योजनाओं और पहलों के उचित वितरण के लिए एक पद्धति का आकलन करने और तैयार करने के लिए कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में सचिवों की पांच सदस्यीय समिति का गठन किया है। भारत में अनुसूचित जाति (एससी), विशेष रूप से तेलंगाना में मडिगा समुदाय द्वारा उठाई गई एससी के उप-वर्गीकरण की मांग के जवाब में।
- 📚 समिति के गठन का संदर्भ: उप-वर्गीकरण के लिए मडिगा समुदाय की वकालत, उप-वर्गीकरण की संवैधानिकता पर सुप्रीम कोर्ट में चल रही सुनवाई, और आरक्षण के सवालों पर ध्यान दिए बिना विशेष पहल जैसी रणनीतियों के माध्यम से शिकायतों को संबोधित करने पर समिति का ध्यान।
- 📋 समिति का जनादेश और संरचना: इस महीने की शुरुआत में गठित समिति में गृह मंत्रालय, कानून मंत्रालय, जनजातीय मामलों के मंत्रालय और सामाजिक न्याय मंत्रालय के सचिव शामिल हैं, जिन्हें आरक्षण के मामलों पर चर्चा न करने और समाधान के लिए वैकल्पिक रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करने के स्पष्ट निर्देश हैं। एससी समुदाय के भीतर शिकायतें।
- ⚖️ उप-वर्गीकरण के ऐतिहासिक प्रयास: राज्यों और संघ स्तर पर उप-वर्गीकरण के ऐतिहासिक प्रयास, साथ ही उप-वर्गीकरण की चुनौतियों और आवश्यकताओं के साथ-साथ अनुभवजन्य साक्ष्य और 100% जाति जनगणना की आवश्यकता भी शामिल है।
- ⚖️ सुप्रीम कोर्ट में चल रही सुनवाई: एससी और एसटी के संबंध में उप-वर्गीकरण की संवैधानिकता की सुप्रीम कोर्ट की सात जजों की बेंच की जांच, और सरकार की समिति का उद्देश्य चल रही कानूनी कार्यवाही का उल्लंघन किए बिना एससी समुदायों के भीतर शिकायतों के समाधान के समाधान तलाशना है। .

मानव पैपिलोमावायरस के लिए समय-समय पर परीक्षण का महत्व

- भारत में सर्वाइकल कैंसर: भारत में महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर दूसरा सबसे आम कैंसर है, जो वैश्विक सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मौतों का लगभग एक चौथाई हिस्सा है, जिसमें लगभग 1.25 लाख नए मामले और सालाना 75,000 मौतें होती हैं।
- 🎯 WHO की 2022 रणनीति: विश्व स्वास्थ्य संगठन की रणनीति का लक्ष्य 2030 तक वैश्विक स्तर पर सर्वाइकल कैंसर को खत्म करना है, जिसमें सर्वाइकल रोग से पीड़ित महिलाओं के लिए एचपीवी टीकाकरण कवरेज, स्क्रीनिंग और उपचार पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- 📈 भारत की प्रगति और चुनौतियाँ: भारत में गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर की घटनाओं में गिरावट देखी गई है, जिसका कारण यौन स्वच्छता, गर्भावस्था की उम्र, गर्भनिरोधक का उपयोग और व्यक्तियों की प्रतिरक्षा स्थिति जैसे कारक हैं, जागरूकता कार्यक्रमों, टीकाकरण और नियमित जांच की आवश्यकता है। .
- 💉 सरकार की योजनाएं और टीकाकरण कार्यक्रम: भारत में दो उपलब्ध टीके हैं, जिसमें यूनिवर्सल टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) में एचपीवी वैक्सीन को शामिल करने की योजना है, जिसमें नौ से 14 वर्ष की लड़कियों को लक्षित किया जाएगा और इसे तीन वर्षों में चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा।
- 🌍 वैश्विक संदर्भ और बाल रोग विशेषज्ञों की सिफारिशें: विश्व स्तर पर, 100 देशों ने एचपीवी वैक्सीन पेश की है, बाल रोग विशेषज्ञों ने अधिकतम प्रभावकारिता और सुरक्षा के लिए प्रारंभिक खुराक की सिफारिश की है, 45 वर्ष की आयु तक के वयस्कों के लिए टीके के लाभों पर जोर दिया है।